

[2023] 2 एस. सी. आर 938

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

ए.

व्यापार कर के आयुक्त

बी.

मेसर्स कुमार पेंट और मिल स्टोर अपने मालिक के माध्यम से

(2011 की सिविल अपील सं. 5937)

बी.

02 मार्च, 2023

[एस. रवींद्र भाट और दीपांकर दत्ता, जे. जे.]

उत्तर प्रदेश व्यापार कर अधिनियम, 1948 -धारा 2 (ई) (आई)-बेस पेंट को अलग-अलग रंगों के साथ मिलाने से नया उत्पाद बनता है या नहीं-उच्च न्यायालय ने कहा कि बेस पेंट को अलग-अलग रंगों के साथ मिलाने से 'नया' उत्पाद नहीं बनता है और इसलिए यह 1948 के अधिनियम की धारा 2 (ई) (आई) के तहत परिभाषित 'निर्माण' की प्रक्रिया से नहीं होता है-राजस्व ने तर्क दिया कि जिन रंगों को मिलाया गया था, उनकी बिक्री 'निर्माण' के बराबर थी, जिसके परिणामस्वरूप एक नया उत्पाद हुआ, जो कर की नई घटना थी-आयोजित:तत्काल मामले में, विशेषज्ञ के साक्ष्य के आधार पर निष्कर्ष यह है कि आधार पेंट को एक योजक के रूप में रंग के साथ मिलाया गया था-इन दोनों पर कर लगाया गया था-परिणामी लेख यानी, एक अलग रंग का पेंट, एक नए वाणिज्यिक उत्पाद में परिणाम नहीं था-नया उत्पाद 'पेंट' के अलावा और कुछ नहीं था, और एक अलग लेख नहीं था-उच्च न्यायालय ने कोई त्रुटि नहीं की।

सी.

डी.

ई.

याचिका खारिज करते हुए कोर्ट ने कहा,

पकड़ना: **1.** महालक्ष्मी स्टोर में, इस अदालत ने पिछले फैसलों पर भरोसा किया जैसे कि बिक्री कर आयुक्त बनाम पियो फूड पैकर्स।

(1980) पूरका.एस. सी. सी. 174 और चौगुले एंड कंपनी (पी) लिमिटेड

एफ.

बनाम भारत संघ का यह कहना कि विनिर्माण प्रक्रिया अलग-अलग हो सकती है, और हर प्रकार के बदलाव के उत्पादन या माल की समाप्ति की प्रक्रिया, कानून में निहित 'निर्माण' के बराबर नहीं होगी, जब तक कि इसके परिणामस्वरूप एक नई वाणिज्यिक वस्तु का उदय न हो।[पैरा 7]

जी.

2. सोनभद्र में, इस अदालत ने अपने समक्ष मामले के तथ्यों का फैसला करते हुए 'निर्माण' के संदर्भ में दिए गए बड़ी संख्या में निर्णयों का हवाला दिया।' यह अदालत विशेष रूप से भारत संघ बनाम दिल्ली क्लॉथ एंड जनरल मिल्स में देखा गया कि

एच.

938 ए.

939

व्यापार कर आयुक्त बनाम एम/एस कुमार पेंट और मिल स्टोर इसके मालिक ए के माध्यम से

“'निर्माण' का अर्थ था एक 'नए' पदार्थ को अस्तित्व में लाना और इसका अर्थ केवल पदार्थ में कुछ परिवर्तन लाना नहीं था।महालक्ष्मी स्टोर में, यह माना गया था कि माल का प्रसंस्करण या परिवर्तन/परिष्करण स्वयं निर्माण के बराबर नहीं होगा जब तक कि इसके परिणामस्वरूप एक नई वाणिज्यिक वस्तु का उदय न हो।एस्पिनवॉल एंड कंपनी लिमिटेड बनाम में निर्णय।

बी.

आयकर आयुक्त, एर्नाकुलम उसी का पालन करते हैं।

सिद्धांत।अदालत ने कहा कि निर्माण को आम बोलचाल में समझा जाना चाहिए और इसका मतलब कच्चे या तैयार सामग्री से उपयोग के लिए वस्तुओं को रूप, गुण या संयोजन देकर उनका उत्पादन करना है।महत्वपूर्ण रूप से हालांकि, यह माना गया था कि यदि लेख में किए गए परिवर्तन के परिणामस्वरूप एक 'नया' और 'अलग' लेख होता है, तो यह 'विनिर्माण' के बराबर होगा।इसलिए निर्णायक बिंदु यह है कि प्रक्रिया का परिणाम ('निर्माण' के बराबर) एक व्यावसायिक रूप से पहचानने योग्य नई वस्तु का उद्भव होना चाहिए, न कि केवल मौजूदा वस्तु का परिवर्तन।[पैरा 8] [942-ए-ई]

सी.

डी.

महाराष्ट्र राज्य बनाम महालक्ष्मी स्टोर **(2003) 1 एस. सी. सी.**

70 :[2002] 4 पूरकाएससीआर 292; सोनभद्र फ्यूल्स बनाम।

आयुक्त व्यापार कर, उत्तर प्रदेश, लखनऊ **(2006) 7 एस. सी. सी.**

322 :[2006] 4 पूरकाएस. सी. आर. 233; बिक्री कर आयुक्त बनाम पियो फूड पैकर्स
(1980) पूरकाएससीसी 174:[1980]

ई.

एस. सी. आर. **1271**; चौगुले एंड कंपनी (पी) लिमिटेड बनाम यूनियन

भारत सरकार (1981) 1 एस. सी. सी. 653:[1981] 2 एससीआर 271; संघ

भारत सरकार बनाम दिल्ली क्लॉथ एंड जनरल मिल्स **(1963)** पूरका**1** एससीआर
586; एस्पिनवॉल एंड कंपनी लिमिटेड बनामके आयुक्त

आयकर, एर्नाकुलम (2001) 7 एस. सी. सी. 525:[2001] 2 पूरकाएस. सी. आर.
559-संदर्भित।

एफ.

मामला कानून संदर्भ

[2002] 4 पूरकाएससीआर 292

संदर्भित किया गया है

पैरा **4**

[2006] 4 पूरकाएस. सी. आर. 212

संदर्भित किया गया है

पैरा **4**

जी.

[1980] एससीआर 1271

संदर्भित किया गया है

पैरा **7**

[1981] 2 एससीआर 271

संदर्भित किया गया है

पैरा 7

[1963] पूरक।1 एससीआर 586

संदर्भित किया गया है

पैरा 8

[2001] 2 पूरक।एससीआर 559

संदर्भित किया गया है

पैरा 8

एच.

940

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

सिविल अपीलिय न्यायनिर्णय:2011 की सिविल अपील सं. 5937।

2002 के टी. टी. आर. सं. 711 में इलाहाबाद में उच्च न्यायालय के न्यायिक निर्णय और आदेश दिनांक 1 से।

के साथ

बी.

2011 की सिविल अपील संख्या 5938 और 5939

आर. के. रायजादा, वरिष्ठ अधिवक्ता, भक्ति वर्धन सिंह, अपीलार्थी की ओर से अधिवक्ता।

सुश्री चरण्या लक्ष्मीकुमारन, सुश्री अपेक्षा मेहता, सुश्री नेहा चौधरी, सुश्री फाल्गुनी गुप्ता, एम. पी. देवनाथ, अश्विनी कुमार, सुश्री इति शर्मा, पुनीत शर्मा, अंशय धतवालिया, अधिवक्ता। प्रत्यर्थी के लिए।

सी.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

एस. रवींद्र भाट, जे.

डी.

1. इन सभी अपीलों में जिस प्रश्न का आग्रह किया गया है, वह उच्च न्यायालय के दृष्टिकोण की शुद्धता है कि वर्तमान मामले में उत्पाद जिस प्रक्रिया से गुजरा-यानी विभिन्न रंगों के साथ आधार पेंट का मिश्रण-एक 'नए' उत्पाद में परिणाम नहीं था, और इसलिए यू. पी. व्यापार कर अधिनियम, 1948 ("अधिनियम") की धारा 2 (ई) (आई) के तहत परिभाषित 'निर्माण' की प्रक्रिया से परिणाम नहीं था।

ई.

2. इन सभी मामलों में तथ्य यह है कि निर्धारिती अन्य बातों के साथ-साथ पेंट के व्यापारी होते हैं। राजस्व ने तर्क दिया कि रंगों की बिक्री जो मिश्रण से गुजरी थी (डी. टी. एस. मशीन की सहायता से एक कम्प्यूटरीकृत प्रक्रिया के माध्यम से) 'निर्माण' के बराबर थी, जिसके परिणामस्वरूप एक नया उत्पाद हुआ, जो कराधान की एक नई घटना थी। दूसरी ओर निर्धारिती ने तर्क दिया कि प्रति मिश्रण 'निर्माण' के बराबर नहीं है, और साबित सिद्धांतों के अनुप्रयोग पर, इस प्रक्रिया से कोई नया पहचानने योग्य उत्पाद या वस्तु सामने नहीं आई है। यह रिकॉर्ड की बात है कि बेस पेंट और कलरेंट दोनों पर अलग-अलग कर लगाया जाता है।

एफ.

जी.

3. उच्च न्यायालय ने पिछले अवसर पर निर्धारिती की दलीलों को स्वीकार किया था और कहा था कि यह प्रक्रिया 'निर्माण' के बराबर नहीं है। कुछ मामलों में राजस्व की अपील पर, इस न्यायालय ने विशेषज्ञ की राय को ध्यान में रखते हुए मामले को नए सिरे से विचार के लिए भेज दिया था। प्रक्रिया देखी गई, और एक रिपोर्ट दिनांकित 20.01.2004 A

एच.

941

व्यापार कर आयुक्त बनाम एम./एस. कुमार पेंट और मिल स्टोर अपने मालिक के माध्यम से [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

इसे हरकोर्ट बटलर तकनीकी विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा जारी किया गया था। उक्त रिपोर्ट में इस प्रकार कहा गया है:-

""प्वान्ट ऑफ सेल" टिंटिंग सिस्टम में उपयोग किया जाने वाला आधार पेंट, इसलिए, एक वांछित छाया या रंग प्राप्त करने के लिए रंगद्रव्य जोड़े जाने के बावजूद एक पेंट है। यह पेंट के रूप में है और इसमें बुनियादी सामग्री और विशेषताएँ हैं। रंगाई नए या अलग उत्पाद को अस्तित्व में नहीं लाती है। बेस पेंट का उपयोग पेंट के रूप में भी किया जा सकता है।"

बी.

4. विवादित आदेश में, उच्च न्यायालय ने एक फैसले को नोटिस करने के बाद

महाराष्ट्र राज्य बनाम महालक्ष्मी स्टोर (2003) 1 में इस अदालत का

एस. सी. सी. 70 ने अभिनिर्धारित किया कि वर्तमान मामले में शामिल प्रक्रिया 'निर्माण' के बराबर नहीं है। उच्च न्यायालय ने भी फैसले को अलग किया

सी.

सोनभद्र फ्यूल्स बनाम आयुक्त व्यापार कर, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

(2006) 7 एससीसी 322। इसलिए, उच्च न्यायालय ने उसके समक्ष दायर संशोधनों की अनुमति दी।

5. राजस्व ने आग्रह किया कि विवादित आदेश में निष्कर्ष गलत हैं, और यह तर्क देने के लिए सोनभद्र फ्यूल्स (उपरोक्त) पर भरोसा किया कि उच्च न्यायालय इस न्यायालय के फैसले से बाध्य था क्योंकि यह सीधे उसी अधिनियम में 'निर्माण' अभिव्यक्ति की व्याख्या पर था। सोनभद्र ईंधन में, अदालत ने विचार किया था कि क्या कोयले की ईंटें 'कोयले' के सामान्य विवरण के साथ आती हैं। इस अदालत ने माना कि इस प्रक्रिया में कुचले हुए कोयले को ब्रिकेटिंग प्रेस में दबाए गए उपयुक्त बांधों के साथ मिलाया जाता था, जिससे नियमित आकार के ब्रिकेट को उपयुक्त रूप से कार्बनीकृत किया जाता था। इस प्रक्रिया को 'निर्माण' के बराबर माना जाता था।

डी.

ई.

6. अधिनियम के तहत 'निर्माण' की परिभाषा इस प्रकार है:-

“2 (ई-1)। 'निर्माण' का अर्थ है किसी भी वस्तु का उत्पादन, निर्माण, खनन, संग्रह, निष्कर्षण, परिवर्तन, अलंकरण, परिष्करण या अन्यथा प्रसंस्करण, उपचार या अनुकूलन करना; लेकिन इसमें ऐसी विनिर्माण या विनिर्माण प्रक्रियाएं शामिल नहीं हैं जो निर्धारित की जाएं।”

एफ.

7. महालक्ष्मी स्टोर (ऊपर) में, इस अदालत ने पिछले पर भरोसा किया

जी.

बिक्री कर आयुक्त बनाम पियो फूड पैकर्स (1980) पूरक जैसे निर्णय। एससीसी 174, और चौगुले एंड कंपनी (पी) लिमिटेड बनाम।

भारत संघ (1981) 1 एस. सी. सी. 653 में यह कहा गया है कि विनिर्माण प्रक्रिया भिन्न हो सकती है, और यह कि हर प्रकार की विविधता, या माल के परिष्करण के उत्पादन की प्रक्रिया, 'निर्माण' के बराबर नहीं होगी जैसा कि इसमें निहित है।

एच.

942

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

कानून जब तक कि इसके परिणामस्वरूप एक नई वाणिज्यिक वस्तु का उदय न हो।

8. सोनभद्र में, इस अदालत ने अपने समक्ष मामले के तथ्यों का फैसला करते हुए 'निर्माण' के संदर्भ में दिए गए बड़ी संख्या में निर्णयों का हवाला दिया।' इस अदालत ने विशेष रूप से ध्यान दिया

भारत संघ बनाम दिल्ली क्लॉथ एंड जनरल मिल्स (1963) पूरक।1 एससीआर बी.

586 उस 'निर्माण' का अर्थ था एक 'नए' पदार्थ को अस्तित्व में लाना और इसका अर्थ केवल पदार्थ में कुछ परिवर्तन लाना नहीं था।महालक्ष्मी स्टोर में, यह माना गया था कि माल का प्रसंस्करण या परिवर्तन/परिष्करण स्वयं निर्माण के बराबर नहीं होगा जब तक कि इसके परिणामस्वरूप एक नई वाणिज्यिक वस्तु का उदय न हो।निर्णय में

सी.

एस्पिनवाल एंड कंपनी लिमिटेड बनाम आयकर आयुक्त, एर्नाकुलम

(2001) 7 एस. सी. सी. 525 इसी सिद्धांत का पालन करता है।अदालत ने कहा कि निर्माण को आम बोलचाल में समझा जाना चाहिए और इसका मतलब कच्चे या तैयार सामग्री से उपयोग के लिए वस्तुओं को रूप, गुण या संयोजन देकर उनका उत्पादन करना है।महत्वपूर्ण रूप से हालांकि, यह माना गया था कि यदि लेख में किए गए परिवर्तन के परिणामस्वरूप एक 'नया' और 'अलग' लेख होता है, तो यह 'विनिर्माण' के बराबर होगा।इसलिए निर्णायक बिंदु यह है कि प्रक्रिया का परिणाम ('निर्माण' के बराबर) एक व्यावसायिक रूप से पहचानने योग्य नई वस्तु का उद्भव होना चाहिए, न कि केवल मौजूदा वस्तु का परिवर्तन।9. वर्तमान मामले में, विशेषज्ञ के साक्ष्य के आधार पर निष्कर्ष यह है कि आधार पेंट को एक योजक के रूप में रंग के साथ मिलाया गया था।इन दोनों पर कर लगता था।परिणामी वस्तु यानी एक अलग रंग का रंग, एक नए वाणिज्यिक उत्पाद में परिणाम नहीं देता है।आम बोलचाल में, नया उत्पाद 'पेंट' के अलावा और कुछ नहीं था, और एक अलग लेख नहीं था।10. इन

परिस्थितियों में, इस न्यायालय की राय में, उच्च न्यायालय गलती में नहीं पड़ा। इसलिए अपील विफल हो जाती हैं और इसलिए खारिज कर दी जाती हैं। लंबित आवेदन, यदि कोई हो, का निपटारा कर दिया जाएगा। लागत के बारे में कोई आदेश नहीं होगा।

डी.

ई.

एफ.

अंकित ज्ञान

याचिकाएं खारिज कर दी गईं।

जी.

(सहायक: श्लोका साह और महेंद्र यादव, एलसीआरए)

एच.